राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे) **तस्मादेव चारित्र्यमिह जनानां क्षीयमाणं विलोक्यते ।**
चारित्र्ये क्षरणमेव, सर्वानर्थानां मूलमनुभूयते ॥84॥

इसीलिये यहाँ लोगों का चरित्र क्षीण होता हुआ देखा जा रहा है। चरित्र में क्षरण होना ही सब प्रकार के अनर्थों का मूल अनुभूत किया जाता है।

Because of this, the character of the people is diminishing/degrading. Degradation of the character is the root/reason for all disasters.

उपदेशक-साधु -सन्त, महात्मस्वसंख्येषु सत्स्वपि हा हन्त ! ।
राष्ट्रे जायमानं , चरित्र - क्षरणं नैवावरोध्यते ॥85॥

हा ! दुःख है, असंख्य उपदेशकों, साधु-सन्तों और महात्माओं के होते हुए भी राष्ट्र में हो रहा चरित्र-क्षरण रोका नहीं जाता है।

Yes, it is sad that even there are countless preachers, sadhus, saints and mahatmas the character degradation cannot be stopped.

यावत् सुविधा-शुल्कं, न दीयते क्वापि कर्मचारिणे ।
सिद्यति न तावदिष्टं , धारणैष न कस्यास्तीह ? ॥86॥

जब तक कर्मचारी को कहीं भी सुविधा-शुल्क (रिश्वत) नहीं दिया जाता, तब तक अभीष्ट सिद्ध नहीं होता है, यह धारणा यहाँ किसकी नहीं है ?

Whose does not believe that no work will not be done till the bribe is not given to the staff?

सम्पन्नो ददात्विमं , परं विपन्नः कथं ददातु ? ।
एतत्कुप्रवृत्तेर्हा ! कदा मुक्तिरत्र मेलिष्यति ? ॥87॥

सम्पन्न व्यक्ति भले ही यह सुविधा-शुल्क दे, परन्तु विपन्न व्यक्ति कैसे देगा ? इस कुप्रवृत्ति से हा ! दुःख है यहाँ मुक्ति कब मिलेगी ?

Even if the rich person gives a bribe, but how will the poor one give? When shall we be free from this evil disposition?

गुरुदेव ! राष्ट्रचरित्र-क्षरणस्य सन्त्येताः कतिचन वर्णिकाः ।
सर्वक्षरण - चर्चया, तु महाभारतमेव सज्जितं स्यात् ॥88॥

गुरुदेव ! राष्ट्र के चरित्र के क्षरण की ये तो कुछ बानगियाँ हैं । सम्पूर्ण क्षरणों की चर्चा से तो एक महाभारत ही तैयार हो जाय।

Gurudev, these are only some of the examples of the nation character degradation/deterioration. If one spoke about all degradation, there would be a Mahabharat .

राष्ट्रोद्धृति-विचारेण , वेद - स्मृति-पुराणोपनिषदुपक्रमे ।
भवतः पितृपादैः श्रीयुत- नवलकिशोरकाङ्कर-महाभागैः ।।89।।

राष्ट्रोद्धार के विचार से वेद, स्मृति, पुराण और उपनिषद् के उपक्रम में आपके पितृचरण श्रीयुत नवलकिशोर काङ्कर महानुभाव के द्वारा ।

Your respected father Shree Naval Kishore Kankar presented the thoughts on the progress of the nation in the series of the books - Veda, Smriti, Purana and Upanishad.

वैदिकभाषायामथ, वैदिकच्छन्दःस्वेवाद्वितीयः प्राक् ।
राष्ट्रवेदो विरचितः, स्वीय-काङ्कार्षेय-भाष्येण सहितः ॥90॥

वैदिक भाषा और वैदिक छन्दों में ही एक अद्वितीय राष्ट्रवेद अपने काङ्कार्षेय भाष्य के साथ पहले विरचित किया गया था।

Respected Kankar wrote unparallel Rashtra Veda was with his commentaries, in the Vedic language and Vedic Chand (metre).

(क्रमशः)